VOL- VIII ISSUE- VI JUNE 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

सातवें दशक की सर्वोत्तम व्यंग्य कृति : 'रागदरबारी'

डॉ. मोनिका व्यास

स्वातंत्र्योत्तर कालखंड के महत्त्वपूर्ण रचनाकारों में श्री लाल शुक्ल प्रमुख हस्ताक्षर माने गए हैं। भारतीय जीवन तथा समाज के मनोगत भावों की पहचान करके ही सर्वथा अभिव्यक्ति देने वाले सर्वत्र ही रचनाकार होता है। यह अभिव्यक्ति समय, समाज और सभ्यता का बेबाकर चित्रण करने वाली है। लेखक सदैव अपने साथ युग को लेकर चलता है और विशेषत: कालजयी लेखक तो युग का सम्यक् चित्रण व विश्लेषण कर के युग को अपने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष खड़ा करता है। वह युग से आगे जाकर नई सभ्यता का निर्माण करता है। युगीन परिस्थितियों का तटस्थ हो कर चित्रांकन प्रतिबिंबित करता है। श्री लाल शुक्ल के उपन्यास में युगीन स्थितियों का ब्योरेवार रूप देखने को मिलता है जिसमें अतिश्योक्ति न के बराबर है। उनके साहित्य में स्थितियों का यथार्थ बोध है, जिसके कारण वे समकालीन लेखकों में श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं।

व्यंग्य उपन्यास

उपन्यास साहित्य की लोकप्रिय विधा है। इसमें कथा का विस्तार जीवन के सभी पक्षों को स्पर्श करने वाला होता है। यह कार्य अत्यन्त विस्तृत विविध घटनाओं तथा अनेकानेक पात्रों के माध्यम से होता है।

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी के मतानुसार– "व्यंग्य उपन्यास उन्हें कहा जा सकता है जिनमें व्यंग्य ही उपन्यासों की आत्मा है, व्यंग्य ही कला है और व्यंग्य ही लक्ष्य है। व्यंग्य उपन्यास में व्यंग्य गर्भित कथा संयोजन, चरित्र विधान, भाषिक चेतना और प्रसंग–संगति का ऐसा प्रस्तावना होता है कि उपन्यास के माध्यम से सम्पूर्ण तंत्र उपस्थित हो जाता है।"[१]

रागदरबारी उपन्यास का महत्त्व–

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी में व्यंग्यात्मक उपन्यासों की परम्परा का राज मोड़ श्री लाल शुक्ल कृत "रागदरबारी" ने प्रस्तुत किया। 'रागदरबारी' व्यंग्य विधा की एक उत्कृष्ट विधायक कृति है। हिन्दी जगत में 'रागदरबारी' को एक सर्वश्रेष्ठ व्यंग्य–उपन्यास के रूप में बहुत ख्याति प्राप्त हुई। इसकी बहुत चर्चा की गई और शुक्ल जी का इस उपन्यास के लिए अभिनंदन किया गया। सन् १९७० में रागदरबारी को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल गया। "रागदरबारी" उपन्यास की बहुत सराहना की गई।

"रागदरबारी" का कथा–परिसर

कथा से व्युत्पत्ति हुआ शब्द "कथ्य जिसका शाब्दिक अर्थ है– कहने योग्य, कथनीय या जो कहना उचित हो।"

कथ्य में समय की गति, घटना, शृंखला को खोलते हुए कार्य कारण के अत: सम्बन्ध पर प्रकाश डाला जाता है। कथ्य में उतार–चढ़ाव आता है क्योंकि परिवेश हमेशा परिवर्तनशील होता है। वह सदैव एक सा नहीं रहता। अत: कथ्य में बदलाव आवश्यक निहित है। अत: प्रसिद्ध पाश्चात्य दार्शनिक अरीस्टाटल ने कहा है कि– "कथ्य में कार्य–कारण, व्यापार की एकता, स्वयं अपने में परिपूर्णता, आरम्भ, मध्य और अन्त का होना आवश्यक कहा है।"[२]

स्वाधीनता के अनन्तर भारतीय जन–जीवन में सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक और नैतिक मूल्यों में जो विघटन उपस्थित हुए हैं, उन्हें शिवपालगंज के जीवन व्यापार की कथा के माध्यम

से "रागदरबारी" में अभिव्यक्ति मिलती है। उपन्यास में लेखक ने भी एक काल्पनिक गांव शिवपालगंज को उत्तर भारत का एक प्रतिनिधि गांव मानकर उसकी पतनोन्मुख जिन्दगी का चित्रण बड़ी तटस्थता, यथार्थ दृष्टि और सूक्ष्म निरीक्षण के बल पर किया है। राल्फ फाक्स के अनुसार– "उपन्यास एक पात्र का नहीं, सम्पूर्ण समाज का चित्र प्रस्तुत करता है। उसमें समाज के विरुद्ध, प्रकृति के विरुद्ध, व्यक्ति का संघर्ष होता है।"[३]

श्रीलाल शुक्ल कृत "रागदरबारी" में किसी परम्परागत सुसम्बद्ध कथानक के बिना भी कथा–परिसर का निर्माण किया है। इसका मुख्य केन्द्र है– शिवपालगंज। शिवपालगंज टाऊन एरिया नहीं है। सरकारी फाइलों में वह ग्राम पंचायत शिवपालगंज के नाम से वर्णित किया गया है। वह ऐसी स्थिति में बसा हुआ है जहां शहर का किनारा छोड़ते ही "भारतीय देहात का महासागर" शुरू हो जाता है। सिनेमा–संस्कृति का प्रभाव भी खूब देखने को मिला है। विश्वविद्यालय का शोध–छात्र भी यहां उपस्थित है। इस प्रकार स्वातन्त्रयोत्तर भारत के सभी महत्त्वपूर्ण अंग यथा गाँव, पुलिस, थाना, अफसर स्कूल, विद्यार्थी, मास्टर, प्रिंसीपल, सहकारी संस्था, न्याय पंचायत, अदालती झगड़े, भ्रष्टाचार, घृणित ग्रामीण राजनीति, दादावाद, गबन, तिकड़म चुनाव की तरकीब, नयी पीढ़ी, कुण्ठाएं, समझौता परस्ती, ताक पर रखी पारिवारिक मर्यादाएं, पूंजीवादी विषमता, पहलवानी, सिर फुटौव्वल, चोरी, डाकाजनी इत्यादि सब इस रचना में है और इसकी अभिव्यंजना का नाम "रागदरबारी" है। राजनीति की गन्दगी और उसकी सड़ांध में गांव भी फंसते जा रहे हैं। मानवीय मूल्यों का पतन होता रहा है और गत व्यवस्था के विरुद्ध हमारा विरोध नपुंसक बन कर केवल भुनभनाहट कर सकता है। स्वातन्त्र्योत्तर भारत के 'देहाती समाज' के यथार्थ को उद्घाटित करने में समर्थ यह महाकाव्य उपन्यास स्वयं लेखक के शब्दों में इस प्रकार है– "रागदरबारी" का सम्बन्ध एक बड़े नगर से कुछ दूर बसे हुए गांव की जिन्दगी से है जो पिछले बीस वर्षों की प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्वों की आघातों के सामने घिसट रही है। यही उसी जिन्दगी का दस्तावेज है।"[४]

शिवपालगंज की आत्मा में शासकों की निरंकुशता व हिंसात्मक उच्छृखलता का अट्टहास है तो शासकों, शोषित व पीड़ितों का करूण हाहाकार भी करूण के कन्दन करता है। पिता तथा पुत्र की उन्मुक्त गलियों की बौछारों से शिवपालगंज की भूमि कृतार्थ रहती है व मेले–ठेलों की रौनक से खनकती है। मिलावटी मिठाइयों ओर उन्मुक्त प्रेम व्यापार की चर्चाओं से गन्धाती भी उसी गीत के साथ है। इस गांव के कण–कण में भारत की आत्मा बसती है और यहां की भूमि को इस बात का गर्व है कि "सारे मुल्क में शिवपालगंज ही फैला है।"[५]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि "रागदरबारी" का दरबार इस शिवपालगंज में जुटा हुआ है। जहां मानवीय इच्छाओं के अतिरिक्त सभी कुछ विद्यमान है और यहीं इस गांव की विशेषता है।

कथा वस्तु और पात्र

कालजयी उपन्यासकार श्री लाल शुक्ल का 'राग दरबारी' उपन्यास सातवें दशक का एक विशिष्ट उपन्यास है। प्रकाशन से ही यह उपन्यास समीक्षकों, लेखकों, सुधी पाठकों तथा छात्र छात्राओं की जिज्ञासा, कौतूहल तथा चर्चा का विषय माना गया है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक 'मील का पत्थर' है– 'रागदरबारी'। यह उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ग्राम जीवन का अत्यन्त तटस्थ एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है। विषय की परिधि अत्यन्त विशाल है।

"रागदरबारी" की कथावस्तु परम्परागत उपन्यासों की कथात्मक परम्परा के सर्वथा भिन्न है। उसकी कथावस्तु का संगठन सर्वथा मौलिक तथा नूतन भंगिमाओं के लिए हुए है। "रागदरबारी" की कथावस्तु का सम्बन्ध– "इन सैंकड़ों गांवों की जिंदगी से है।"[६]

'रागदरबारी' की कथा वस्तु ३५ खण्डों में विभाजित किया है। कथा वस्तु का मुख्य केन्द्र बिन्दू शिवपालगंज है। उसके साथ ही शिवपालगंज के विविध क्षेत्रों की उथल–पुथल का चित्रण लेखक ने प्रस्तुत किया है, जिसमें छंगामल विद्यालय के इंटरमीडिएट कॉलेज, पुलिस थाना को–ऑपरेटिव सोसायटी, गांव पंचायत तथा गांव स्थितियों का ब्यौरेवार चित्रण साहित्य मनीषी लेखक श्री लाल शुक्ल ने किया है। उपन्यास का प्रारम्भ रंगनाथ के अपने मामा के गांव की तरफ निकलने से शुरू होता है। लेखक ने "भारतीय देहाती को महासागर" की उपमा दी है। इस प्रकार "रागदरबारी" सारे देश की कथा को पूर्ण करता है।

कथा का आधार शिवपालगंज है, जहां रंगनाथ के आने और लगभग ६ मास के जीवन को यहां की विभिन्नताओं के बीच बिताने का घटनाचक्र ही कथानक द्वारा व्यक्त किया गया है। उपन्यास के ३५ परिच्छेदों में जो कथानक विस्तृत हुआ है, उसमें अधिकारिक कथा और प्रासंगिक कथाओं के माध्यम से व्यंग्य का ही उपस्थापित हुआ है।

इस प्रकार "रागदरबारी" में उपन्यासकार ने किसी सुनिश्चित कथा को कहना अपना लक्ष्य नहीं बनाया है। बल्कि विभिन्न कथा प्रसंगों और कथा सम्भव परिदृश्यों के सहारे आजादी के बाद भारतीय गांवों में हुई। परिवर्तन को उपस्थित करना ही "रागदरबारी" का उद्देश्य है। हर घटना और हर पात्र के माध्यम से 'श्री लाल शुक्ल' ने व्यंग्य प्रस्तुत किया है। "रागदरबारी" की कथा–परिसर उपन्यास के समूचे तंत्र में बिखरा हुआ है। जिन झलकियों और घटनाओं को "रागदरबारी" के कथा–फलक पर विस्तार मिला है, उन सबके संयोजन से इस व्यंग्य उपन्यास में कथा तत्व का साकारीकरण हुआ है।

रागदरबारी के पात्र

"रागदरबारी" चरित्र चित्रण की दृष्टि से एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। वास्तव में कुछ समीक्षकों ने इस उपन्यास को आंचलिक उपन्यास मानते हुए परिवेश को ही उपन्यास का नायक माना है। लेखक ने भिन्न–भिन्न चरित्रों के माध्यम से भिन्न–भिन्न प्रवृतियों का उद्घाटन किया है।

"रागदरबारी में वर्णित कुछ महत्त्वपूर्ण पात्रों का चरित्रांकन होना अति आवश्यक है। उन पात्रों की विशिष्टताएं तथा जीवन दृष्टि क्या थी, इन सब को समझना भी अति आवश्यक है। रागदरबारी में कथागत चेतना को उजागर करने वाले मुख्य पात्र–वैद्य जी, रंगनाथ, रूप्पन, प्रिंसीपल तथा लंगड़ है। ठीक उसी तरह गौण पात्रों में – गयादीन, सनीचर, खन्ना मास्टर, मालवीय, बद्री पहलवान, छोटे पहलवान, कुसहर प्रसाद, बेला तथा रामाधीन, भीखमखेड़वी आदि हैं।"

"रागदरबारी" के व्यंग्य–व्यंजना के लक्ष्य

रागदरबारी का व्यंग्य–फलक अत्यन्त विशाल है। सम्पूर्ण देश की समस्याओं का इतना यथार्थ और प्रभावशाली चित्रण इसके पूर्व के उपन्यासों में उपलब्ध है और इस दृष्टि के कारण वह कालजयी रचना बन गई है। मानवीय विवशता, अन्याय, भ्रष्टाचार, पूंजीवादी प्रभाव से उत्पन्न मानवीय सम्बन्धों का खोखलापन, संस्कार हीनता तथा मूल्य संक्रमण 'रागदरबारी' की व्यंग्य–व्यंजना के प्रमुख माने गए हैं। राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, नैतिकता तथा मानवीय भावनाओं इत्यादि का व्यंग्य के प्रमुख प्रहारक लक्ष्य हैं।

१. राजनीतिक परिवेश

स्वतन्त्रता से पूर्व, भारतीय जन–नेताओं तथा जन सामान्य के मानस में एक ही उद्देश्य घूम रहा था वह था, हर अवस्था में स्वतन्त्रता की प्राप्ति तथा अंग्रेजों का भारत–भूमि से निष्कासन। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में राजनीतिक गतिविधियां बदली और अंग्रेजों से राजनीतिक सत्ता भारतीयों के हाथ में आयी और उसका परिणाम यह है लोकतंत्र की बहाली। इन सब का सजीव चित्रण हमें श्री लाल शुक्ल के उपन्यासों में देखने को मिलता है।

२. सामाजिक वातावरण

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य कार का सीधा सम्बन्ध समाज के साथ होता है। वह अपनी रचना का विषय, घटना, पात्र, वातावरण, समय से ही लेता है। कोई भी रचना तभी ही कालजयी बनती है जब समय को रचना में ठीक ढंग से उठाया गया हो, जिस रचना में सामाजिक वातावरण को न उभरा गया हो तो वह रचना कालजयी कभी नहीं बन सकती।

भारत में आधुनिकीकरण के आने से सामाजिक जीवन हर तरह से प्रभावित हुआ, जिसमें सामाजिक,—पारिवारिक सम्बन्धों को परिभाषित करने की जरूरत पड़ी। परम्परागत, सामाजिक, नैतिक मूल्य बिखरने लगे। इस प्रकार से श्री लाल शुक्ल के उपन्यास 'रागदरबारी' में सामाजिक आयाम देखने को मिलता है।

३. आर्थिक विसंगतिया

यह युग अर्थ की महता का युग है। हमारे दैनिक जीवन का व्यवहार अर्थाधारित है। आज नैतिकता की कसौटी पर ही अर्थ की तुला को मापा जा सकता है। आज के इस औद्योगिक समाज में सामाजिक ताना—बाना उलझ कर रह गया है। इन्ही असंगतियों को श्रीलाल शुक्ल अपने उपन्यास में स्थान देकर उसे व्यंग्य का माध्यम रहा है।

हिन्दी के व्यंग्यात्मक उपन्यासों के विषय क्षेत्र में आर्थिक परिवेश की विसंगतियों को मुखरित करने का भी लक्ष्य रहा है। आज के युग में जीवन की अधिकांश समस्याओं के उत्स में आर्थिक परिस्थितियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

'रागदरबारी' उपन्यास में शिवपालगंज के सहकारी भण्डार का सुपरवाइजर रामस्वरूप दो हजार का अनाज लेकर भाग जाता है। वैद्य जी मानते है कि— ''जो भी हो, यदि सरकार चाहती है कि हमारी यूनियन जीवित रहे और उसके द्वारा जनता का कल्याण होता रहे तो उसे ही हरजाना भरना पड़ेगा। अन्यथा यह यूनियन बैठ जाएगी। हमने अपना काम कर दिया, आगे का काम सरकार का है। उसकी अकर्मण्यता भी हम जानते है।''[७]

४.शैक्षणिक विद्रूपताएँ—

शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रथम अनिवार्यता होती है। साथ ही वह उसकी शक्ति का केन्द्र भी। राष्ट्र को सुयोग्य, निश्चित एवं शिक्षित नागरिक प्रदान भी शिक्षा का व्यापक उद्देश्य माना जाता है। 'रागदरबारी' में श्रीलाल शुक्ल ने इस प्रकार से शैक्षिक विद्रूपताओं को उठाने का प्रयास किया है।

'रागदरबारी' उपन्यास व्यंग्य—फलक पर वर्तमान शिक्षा—प्रणाली से सम्बन्धित प्रत्येक असंगति का खुल कर चित्रण करता है। किसी भी राष्ट्र की बौद्धिक और सांस्कृतिक चेतना के विकास हेतु राष्ट्रीय भावना और शिक्षण—व्यवस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली अत्यन्त ही दोषपूर्ण बन चुकी है। शिक्षा—पद्धति का सुनिश्चित मानदण्ड स्थापित करने में हमें हमेशा से असफल रहे है। ऐसा प्रतीत होता है मानो ..... ''वर्तमान शिक्षा—पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।''[८]

इस प्रकार से 'रागदरबारी' का छंगामल विद्यालय ने केवल शिवपालगंज का ही अपितु सम्पूर्ण भारत भर में फैले हुए प्राथमिक शालाओं से विद्यालयों के शोध कार्यों का सम्पूर्ण लेखा—जोखा प्रस्तुत करता है। शिक्षण क्षेत्र में विभिन्न विकृतियों का वृहद कोश है यह उपन्यास—'रागदरबारी'

साहित्य, भाषा एवं संस्कृति

'रागदरबारी' उपन्यास हिन्दी कथा, साहित्य की एक ऐतिहासिक व महत्वपूर्ण सृष्टि है जिसकी उपलब्धियों के वृतान्त में स्वातन्त्रोतर राष्ट्रीय जीवन की विशाल गाथाओं की विकृतियों का उल्लेख प्रस्तुत किया है। राष्ट्रव्यापी अराजकता और अव्यवस्था की प्रतीक यह कथा तथा विद्रूपताओं के महाभारत का कुरूक्षेत्र यह उपन्यास 'रागदरबारी' है। जो कि रंगनाथ की संजयवादी निरपेक्ष और तटस्थ चिन्तन दृष्टि के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में रंगनाथ शिवपालगंज की समस्त घटनाचक्रों के साथ गतिशील रहता है लेकिन वह

मात्र तटस्थ प्रेक्षक की ही भांति, वह कोई निर्णायक भूमिका सम्पन्न नहीं करता। समाज, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, साहित्य और संस्कृति के सम्पूर्ण क्षेत्रों पर 'रागदरबारी' का लेखक उस पर व्यंग्य शास्त्र से प्रहार करता है और अपनी बौद्धिक पाठकों को विचारोतेजक झटकों से तिलमिला देता है।

पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के आदान–प्रदान के इस वातावरण में समाज का वह वर्ग भी अत्यन्त ही कुण्ठित और दमित हो गया है जिसे हम गौरव व श्रद्धापूर्वक बुद्धिजीवी कहते है। ''पुरानी पीढ़ी का यह विश्वास था कि हम बुद्धिमान है और हमारे बुद्धिमान हो चुकने के बाद दुनिया से बुद्धि नाम का तत्व खत्म हो गया है और नयी पीढ़ी के लिए उसका एक कतरा भी नहीं बचा है। वहीं पर नयी पीढ़ी की यह आस्था थी कि पुरानी पीढ़ी जड़ थी, थोड़े से खुश हो जाती थी और अपने और समाज के प्रति ईमानदार न थी, जबकि हम चेतन हैं, किसी भी हालत में खुश नहीं होते है और अपने प्रति ईमानदार है और समाज के प्रति कुछ नहीं है, क्योंकि समाज कुछ नहीं है।'

रंगनाथ सम्प्रति युवा वर्ग की दिशाहीन की भटकन की सही पहचान है। लेखक की इस गुरू–गम्भीर युग बोधक दृष्टि का समर्थ प्रमाण है। इस देश में रंगनाथ जैसे लाखों नवयुवकों का भविष्य अस्मिता की खोज में अंधेरे में डूब रहा है।

(४) रागदरबारी में ग्रामीण चेतना–

भारत की अधिकांश जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। औद्योगिक विकास के गावों का आकर्षण कम हुआ तथा नगर के प्रति खिचाव बढ़ने लगा। आज के समय में ईमानदारी तथा सत्य की आवाज हल्की है जबकि झूठ, फरेब, बेईमानी इत्यादि हमारे जीवन के मूल्य बनते जा रहे है। इस प्रकार का स्पष्ट परिदृश्य श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्यास 'रागदरबारी' में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

आधुनिकता के प्रति आकर्षण के मध्य ग्रामीण जीवन की चेतना उन सभी 'रागदरबारी' में श्रीलाल शुक्ल ने ग्रामीण जीवन की चेतना उन सभी पक्षों को आलोचना की दृष्टि से अध्ययन कर उस पर व्यंग्यात्मक प्रहार किये है। '

''एक बड़े नगर में कुछ दूर बसे हुए गांव की जिन्दगी से है जो पिछले बीस वर्षों की प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थी और अनेक अवांछनीय तत्वों के आघातों के सामने घिसट रही है। यह उसकी जिन्दगी का दस्तावेज है''[९]

'रागदरबारी' उपन्यास में ग्रामीण चेतना का सर्वाधिक दुर्दशा पूर्ण पक्ष शिक्षा व्यवस्था से सम्बन्धित है।

ग्रामीण शिक्षा की दुर्दशा का यह कारण है कि शिक्षण के लिए समुचित भवनों की भी व्यवस्था नहीं है। अध्यापकों में घृणित स्वर की आपसी फूट और वैमनस्य की भावना छाया हुई है।

ग्रामीण समाज की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति धार्मिक विकृत व्यवस्था की है। धार्मिक अंधविश्वासों का लाभ उठाकर चुनाव–प्रसार करने वाले राजनीतिक दलों की न्यूनता आज भी भारत वर्ष में नहीं है। इसी प्रकार पुलिस और न्याय व्यवस्था भी अत्यन्त ही अव्यवस्थित है। शिवपालगंज का पुलिस थाना कई शताब्दियों से पुराना है वहां अपराध रोकने के आधुनिक उपकरणों का प्रयोग यहां नहीं होता।

सारांश यह है कि ''रागदरबारी'' में विषय–वस्तु पक्ष अत्यंत ही प्रौढ़ गम्भीर और बहुमुखी आयामों से अलंकृत है।

'रागदरबारी' की कथा इस दृष्टि से रंगनाथ की आँखों देखी घटनाओं का संग्रह है, जो उसने शिवपालगंज में छः माह रहकर जो भी अनुभव की उसी की अनूभूति रागदरबारी की वृहद कथा बनी है। यथार्थवादी दृष्टि से ग्रामीण जीवन के सम्पूर्ण पक्षों का विस्तार से प्रस्तुतीकरण हुआ है। उपन्यास में सभी झलकियां, घटनाएं, वर्तमान स्थितियों, विचारधाराओं को पात्रों के माध्यम से स्पष्ट किया है। इनके साथ उपन्यास में उनके दोष और बाह्याडम्बरों का उद्घाटन किया है। सम्पूर्ण उपन्यास में कहीं पात्र घटनाओं के कारण है, तो कहीं घटनाएँ पात्रों को अपने में लिए रहती है।

डॉ. ज्ञानचन्द्र गुप्त का कथन है कि –

''पात्र संयोजना में लेखकीय दृष्टि में व्यंग्य प्रधान रहता है। पात्रों की संख्या काफी है तथा वे जीवन की विविध राहों से लिये गये है।''[१०]

'रागदरबारी' में अनेक पात्र है हर एक पात्र का अपना प्रतीकार्थ तथा ध्वन्यार्थ है। 'रागदरबारी' की बेमेल राग अलापने वाला प्रथम चरित्र शोधार्थी रंगनाथ है। जोकि अपना स्वास्थ्य के इलाज करवाने हेतु शिवपालगंज आता है जहां उनके मामाजी वैद्य जी रहते हैं। वैद्यजी गांव के राजनीतिक गतिविधियों के सूत्रधार है। इसमें सहकारी समिति, छंगामल इंटर साइंस कॉलेज ग्राम पंचायत इत्यादि सभी व्यवस्था वैद्यजी करते है। रूप्पन आज के कॉलेज छात्रों को दिशाहीनता का प्रतिनिधित्व करता है। मास्टर खन्ना दिन–रात षड्यंत्र रचने से फुर्सत नहीं मिलते। मास्टर मोती लालजी पढ़ाते कम है और अपनी चक्की की तरफ अधिक ध्यान देते है। गयादीन अवसरवादी होने के साथ गौण रूप से स्वार्थसाधक है। जोगन्नाथ लोफर, छोटे पहलवान मुंहफट, दूरबीन सिंह डकैत और रामस्वरूप गबनकर्ता है। स्त्री पात्रों में बेला है जो अविवाहित है लेकिन फिल्मी गीतों की पत्रावली लिखना और घर की छतों पर से होकर जाती है और उसी राह से पुन: लौट कर आती है। इस प्रकार से रागदरबारी के सभी रास्ते में विकृत चेहरे है और लेखक ने विभिन्न व्यंग्यों के माध्यम से इन चरित्रों का उपयोग लिया और समाज के विविध पक्षों को अनावृत किया है। श्रीलाल शुक्ल की व्यंग्य–विधायिनी क्षमता एवं मानवीय संवेदना ने अनेक पात्रों को बहुत सी सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है।

व्यंग्य भाषा शैली

हिन्दी व्यंग्य विधा के कथ्य में प्रवेश पाने के पश्चात् सर्वप्रथम भाषा का मुख्य द्वार खोलना बहुत आवश्यक है। भाषा हमारे विचारों का आदान–प्रदान का साधन है। भाषा के आधार पर ही किसी भी कृति की रचना करना अनिवार्य होता है। भाषा न केवल लोगों के सम्प्रेषण, बल्कि उनकी संस्कृति की भी वाहक होती है। किसी स्थान विशेष के लोगों की संस्कृति की भी वाहक होती है। किसी स्थान विशेष के लोगों की संस्कृति–सभ्यता की झलक वहां की भाषा में दिखाई पड़ती है। व्यंग्य की भाषा शास्त्र की भाषा नहीं होती है। व्यंग्य चूंकि अपने युग का प्रतिबिम्ब होता है, अत: उस युग का आदमी जिस तरह अपनी जिंदगी बसर करता है उसमें सांसे लेता है और अपने तरीके से अपनी जिंदगी का सलीब को ढ़ोता रहता है, उसकी इसी अभिव्यक्ति का भाषा में होना अनिवार्य होता है, तभी व्यंग्य प्रामणिक व प्रभावोत्पादक बन जाता है।

स्वातंत्र्योतर कथाकार श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों मे हिन्दी में रचे–बसे अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी और उर्दू के शब्द तो मिलते है और कहीं क्षेत्रीय बोली के रूप में। शुक्ल ने इन शब्दों का प्रयोग हिन्दी की प्रकृति और शैली के अनुरूप ही किया है। उपन्यास के विविध पात्रों के अनुरूप उनकी भाषा की प्रकृति अत्यन्त प्रभावशाली और जीवन्त है। अवसरानुकूल हिन्दी भाषा की प्रमुख क्षेत्रीय बोलियों के प्रयोग से भाषा अत्यन्त संजीव व शक्तिशाली बन गयी है।

'रागदरबारी' की औपन्यासिक सर्जना की अत्युत्तम उपलब्धियों में आंचलिक संदर्भ संकलित प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक भाषायी सौष्ठव से गणना नहीं की जाती, बल्कि वह उपन्यास को केवल प्राणवान ही नहीं बनाती, बल्कि पाठकों को भी अत्यन्त अभिभूत भी करती है। सातवें दशक में सभी विधाओं की भाषिक संरचना का अध्ययन करते हैं। तो 'रागदरबारी' रचना एक मील का पत्थर सिद्ध होती है। यह उपन्यास लखनऊ के आस–पास नगर के ग्रामीण अंचल शिवपालगंज की बोलचाल की भाषा के विशिष्ट शब्दों से अंलकृत उपन्यास रागदरबारी की दिव्यक आभा पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

'रागदरबारी' की भाषा सिर्फ ब्रज या भोजपुरी तक सीमित न होकर उतरप्रदेश , बिहारी, राजस्थान, हिमाचल और दक्षिणी महानगरों के भीतर भागों में पनप रही हिन्दी को भी साथ लेकर चलती है। 'रागदरबारी' की भाषा हिन्दी उपन्यास को सीमित

आंचलिकता के मोह कैसे भी मुक्ति दिलाई है। रागदरबारी में भाषा प्राय: दो रूपों में मिलती है। (१) एक रूप जो गजहें के लोगों की बोलचाल के संवादों में उभरता है, तो दूसरा रूप स्वयं उपन्यासकार की अपनी वक्रतापूर्ण, गहरी व्यंग्यात्मकता भाषा शैली में उपन्यास में आंचलिक शब्दों की सौन्दर्य छठा अपने में सर्वथा मौलिक और नूतन है। वे इस शब्द–प्रयोग से रागदरबारी कृति को विशिष्ट गरिमा प्रदान करने में आश्चर्यजनक रूप से सफल हुए हैं। स्थानीय बोली का उपन्यासों में प्रयोग आम तौर पर स्तरीय पाठकों को भाव–ग्राहयता के सम्प्रेषण व्यापार में रूकावट पैदा करने वाले आभासित होते हैं। भाषा ऊपर से आढ़ी हुई वस्तु नहीं होती, बल्कि वह स्थान विशेष के लोगों के अपने संस्कार और अनूभूति के साथ अनिवार्य भाग से संपृक्त होते हैं। अत: इनमें कुछ मुहावरे व लोकोक्तियां इत्यादि इस प्रकार से वहां के जीवन सत्यों के साथ जुड़े होते हैं, और वे सत्य विशेष को अपने साथ लिए हुए होते हैं इसीलिए "रागदरबारी" में भी आचंलिक स्वरों का प्रयोग उसकी भाषागत वैशिष्ट्य का ही सूचक है न कि भाव सम्प्रेषण का अवरोधक तत्व है। वस्तुत: इसमें लोक शब्दावली का अर्थ ग्रहण करने में पाठक की कठिनाई अनुभव होती है तथापि ऐसा भाषिक प्रयोग औपन्यासिकता की संरचनात्मक शक्ति से अभिवृद्धि की है। श्रीलाल शुक्ल ने रागदरबारी में इसी तरह से पैनी और धारदार व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया कि पाठक, लेखक के ऊबाऊ प्रसंगो, यथार्थ के सारहीन विवरणों को भी रोचकता के साथ उस बहाव में पढ़ जाता है।

डा. दंगल झाल्टे के अनुसार–

''भाषा कौशल और उसकी अत्याधुनिक तलाश में श्रीलाल शुक्ल का 'रागदरबारी' एक महत्तम कृति है, जो भाषा की वक्रता, व्यंग्यात्मकता, तीव्रता तथा सौन्दर्य–चेतना के नये आयाम खोलती है।"[११]

निष्कर्ष–

इस प्रकार से लेखक ने 'रागदरबारी' के ग्रामीण अंचल–बोध की तीव्र व प्रामाणिक अनुभूति के यथार्थ बिम्ब किये है और उसमें उसे आशातीत सफलता भी प्राप्ति हुई है। 'रागदरबारी' उपन्यास में स्वातंत्र्योतर परिस्थिति के सम्यक्, व्यापक, परिवेश को समेटने वाला जीवंत दस्तावेज है और अनेक परंपरागत औपन्यासिक तत्वों को एक ओर ठेलकर रचनात्मक स्तर पर कुछ नए मोड़ देते का सफल प्रयास किया है। 'रागदरबारी' की प्रमुखता का प्रभावशाली कारण उसकी शिल्प संयोजना और भाषिक सौष्ठव है। 'रागदरबारी' की भाषा के संदर्भ में राधा दीक्षित का कहना है कि–

''रागदरबारी का लेखक भाषा के प्रति बेहद संवेदनशील और सतर्क है। भाषा एक दर्रे पर नहीं भागती। उसका प्रयोग परिवेश और पात्र को ध्यान में रखते हुए किया गया है।''[१२]

इस प्रकार से व्यंग्य उपन्यास में व्यंग्य भाषा के सभी उपकरणों का सटीक और कुशल प्रयोग हुआ है, इसमें कोई संदेह नहीं।

व्यंग्यात्मक कृति के रूप में श्रीलाल शुक्ल का बहुचर्चित उपन्यास 'रागदरबारी' कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण बन पड़ा है। इसमें जीवन के बदलते हुए मूल्यों के परिपेक्ष्य में, शहर और कस्बे में जन–जीवन समाज व्यवस्था तथा सरकारी एवं अर्धसरकारी तंत्र के क्रमश: प्रवष्टि भ्रष्टाचार का व्यंग्यात्मक शैली में चित्रण है। इसमें लेखक ने एक बड़े कस्बे के माध्यम से पूरे भारतीय जीवन की संस्कार हीनता व मूल्य शून्यता ध्वनित किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत देश के तथा कथित विकास की यथार्थ एवं तीव्र व्यंग्यात्मक झांकी, शायद हिन्दी के किसी उपन्यास में दृष्टिगोचर नहीं होती। शिल्प और कथ्य की दृष्टि से 'रागदरबारी' एक अत्यंत सुगठित एवं प्रौढ़ कृति है।''[१३]

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. डॉ. नन्दलाल कल्ला, हिन्दी व्यंग्य उपन्यास सिद्धान्त और विकास, पृ. १६

२.हिन्दी व्यंग्य विधा शास्त्र और इतिहास– डॉ. बापू राव देसाई, पृ. १९३
३.हिन्दी उपन्यास–महाकाव्य के स्वर डॉ. शांति स्वरूप गुप्त, पृ. १२९
४.श्री लाल शुक्ल– रागदरबारी, भूमिका
५.श्री लाल शुक्ल– रागदरबारी, पृ. ४०५
६.श्री लाल शुक्ल, प्रथम संस्करण, १९६८
७.रागदरबारी, पृ. ७५
८.रागदरबारी, पृ. १२
९.श्री लाल शुक्ल, रागदरबारी, प्रारम्भिक कथन
१०.रागदरबारी, पृ. १०९
११.डॉ. ज्ञान चन्द्र गुप्त– स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना, पृ. २७३–७४
१२.डॉ. दगल झाल्टे– उपन्यास समीक्षा के नये प्रतिमान, पृ. १३४
१३.डॉ. राधा दीक्षित– रागदरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, पृ. २४९
१४.हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां– डॉ. शिव कुमार वर्मा, पृ. ६३६

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com